CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक-संस्कृति के मूर्तिमान स्वरुप

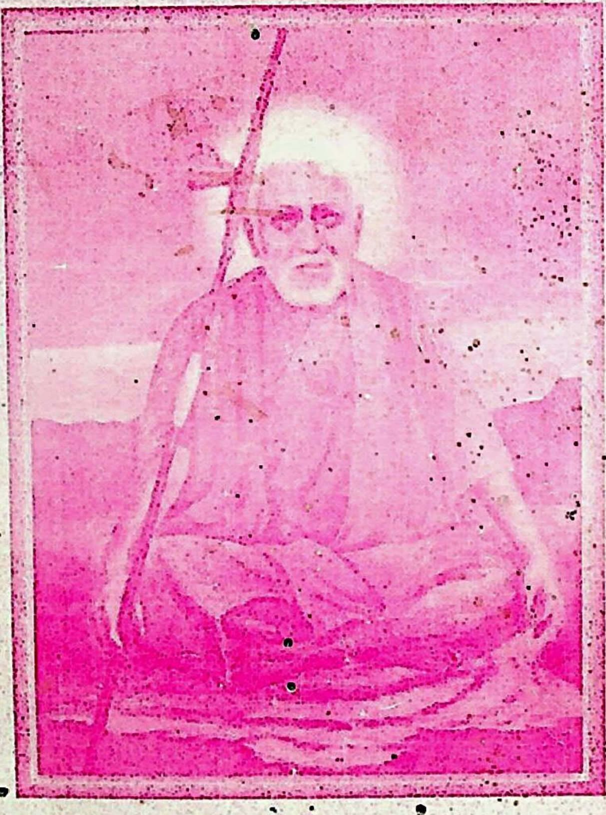

श्री १०८ दण्डिस्वामी पूर्णानन्द सरस्वती
(काशिराज के ज्योर्तिविद्)
पं० पूरणमिश्र के वंशधर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक-भाषा भोजपुरी की ऐतिहासिक उपादेयता

'साहित्य-आकदमी' के तत्कालीन-अध्यक्ष

प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी

के नाम भोजपुरी भाषा की मान्यता के लिये

खुला-पत्र

—दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

सम्पादक-
प्रमोद कुमार दीक्षित
एम०ए० द्वय (समाजशास्त्र, हिन्दी)
बी.एड., साहित्याचार्य
व्यवस्थापक-भोजपुरी साहित्य मंदिर
बी-३/१७५, शिवालाघाट, वाराणसी-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजगुरुमठ के कौटिल्य सत्संग-भवन में प्रतिष्ठित, श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-शोध-संस्थान के स्थायी निदेशक प्रमोद कुमार दीक्षित का वक्तव्य

प्रकासक कऽ दूइ बाति.

भोजपुरी भासा आ ओकरा व्याकरन का बारे में कुछ कहे समझावे ले पहिले-भोजपुरी जनपद के इतिहास, भोजपुरी लोगन के आचार-विचार (लोक-संस्कृति) आ भोजपुरी भासा का आवे के,-परगट होखे के,-सोत पर कुछ अँजोर डालत जरूरी बा। भोजपुरी, वैदिक संसकीरत का मानसरोवर से मिलहुर, खेझरा सउनाइल रूप में निकलि के फरियात-फरियात अइसन फरिछा सरूप पवले बा। भोजपुरी भासा आ एह जनपद का लोगन में बेदुबा रिसी-मुनी, तपसी आ पंडित लोगन के तेज, वशिष्ठ विश्वामित्र, जागबलिक, भिरगू, अंगिरा, अथरवन नियर ग्यानमानन का ग्यानकिरिन के बिजली, उपनिषद् का बाभन-छतिरिन के खोज आ रघु, दलीप, अज, मानधाता, भगीरथ, शिवि, दधीचिं, हरिश्चन्द, अरजुन, भीम, भीसमदादा, सुखदेव ओगयरह का लूरि-सहूर, चाल-ढाल के सवतुक असर बा।

ग्यान सनातन तत्तु ह। एकर दूइ भाग होला। एगो त जोति, अँजोर, (प्रकाश), दूसरका ओह तेज से जगमगाये वाला पदारथ (प्रकाश्य)। ग्यान त जोति क अंश ह आ जगमगाये वाला मेंही दरब ओकरा संगे खिंचाइ के आ जाला। एकरा के रस आ बल के रूप में समुझीं। रस, ग्यान, रूप आ बल ओकर ढाँकन (आवरण) ह। ढाँकन हटि गइला पर अपने आप जोति चमकि उठे ले। सुरुज आ बादल का परतोख से देखीं। बदरी हटते सुरुज जगमगाये लागेलनि। चमक कहीं से ले आवे के ना परे।

जइसे एगो लोटा में हंम घीव धइ देईं त घीव निकालिओ लिहला पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोटा में चिकनाई बहुत देर ले बनल रही। घीव क भाँड़ भा मेंटी फूटि गइल त घूर पर फेंकि दियाइल। संजोग वश घूर में आगि लागि गइल आ फेंकला मेंटी में आँचि पहुँचलि त ओह टुकड़न में ले चिकनाई टेघरि के टपके लागी। पवन, फूलन का पंजरा होइके बहे ला त फूलन के अंश अपना संगे ले जाला। एही कारण से हमनीं के हवा में सुगंध मालूम होला। अइसहीं जीव भी शरीर में बास करेला त पिंजड़ा छोड़ि के उड़े का बेर पंचभूतन के, पाँचों तत्तुन के कुछ अंश संगे ले जाला।

संसकार ओहि अंश के रुप ह। जुग-जुग का एह संसकारन के जोरि-बटोरि के हर देश के आचार-विचार बनल बा।

समान विचार, रीति-रेवाज, परम्परा वाला मानुस लोग का समूह क नावँ-समाज ह। संसार क कवनो देश जब बढंती पर चले ला तब ओइजा के पंडित, विदमान, ग्यानी, साहित्त रचवइया एगो विशेष किसिम का आचार-विचार के जनम देलन। आतमा, परमातमा, लोक-परलोक आ जीवन का बारे मे उनकर कुछ सबतुक विचार होला, समाज में एक अंग क दूसरा से कवन नाता आ लगाव बा-इहे सभ मिलाइ के आचार विचार आ संसकिरती सूझ-समुझ बनि के तइयार होला। समय का धारा का संगे भा जगतियन का बढ़ती आ उतार चढ़ाव के पाइ के एहू में अँजोर अन्हार के फेर बदल होत रहेला। जवना समाज के बूझ-विचार जेतने पोढ़, सबतुक खेहल-पोहल, सवाँरल-माँजल होला ओही का मुताबिक दुनियाँ में ओकर जिनिगी कायम रहे ले।

भोजपुरी जनपद के इतिहास एकर, रीति-रेवाज, लोगन के जनम-जुगी ब्रेवहार, चाल-ढाल, बोली-बचन, ओढ़न-पहिरन, परब-तेवहार देवतन के अरचा-पूजा सभके अकिलि का तराजू पर तउलीं, सुमति का फरुहा से खँड़हरन के खोदीं, पुरजे-पुरजे बिलगाईं त रउरा के अचरत होई। भोजपुरी-भासा का सागर के डुबकी लगा के खोजला-टकटोरला पर अनमोल रतन भेंटइहेंनि। देव-असुर का लड़ाई का बेर समुंदर मँथाइल त चउदहे रतन भेंटाइल। एइजा त जेनिये बुड़की मारीं अनगिनित अनमोल रतनभेंटात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न। भोजपुर के जनपद इतिहास में सरहँग आ सरनामी रहल बा। काशी आ मगध राज का बीच में ई दूनों के दिलदिमाग ठहरी। भारत में कबहीं एकरा समान आदर भाव केहू के ना मिलल। एह जनपद के कलेवर आ गिरदा आचार-विचार का नाता से भारी बा।उत्तर में कपिलवसतू, गोरखपुर-चंपारन के कुछ भाग लिहले पच्छिम आजमगढ़ आ काशिका का डँड़ार काशी तक, पुरुब मे सोन का किनार आ बाणभट्ट के जनमधरतीचवन आसरम के चरन-छूवत दक्खिन में चंदनपीर पहाड़ी के घोरियावत, सहसरावँ (सहसाराम) धइले आगे बढ़ल बा। सहसाराम, काशी-कवशांबी-तामलुक राजमारग पर भोजपुरी जनपद के लहरात पताका रहल बा। बउधक्षेत्र का पहिले ले एह सड़कि से कवशांबी आ तामलुक (ताम्रीलप्ति-चटगांव) का बीच बनजारा चलत रहल ह। हजार बउधसन्यासिन के रहे क एहिजा आराम या अड़ार रहल ह, एही से एकर सहसरावँ नावँ परल बा। सहसराम से आगे पहाड़ के तरियानी धइले राजा शालिबाहन के रजधानी आ हरसू बरम्ह का धामले पच्छिमाहुत एकर सिवान चलि गइल बा।

वैदिक विचार धारा के जहाँ लहरि लहराइल, ग्यान-धरम के पहिला चक्का ऊगल, रिसीमुनी मानसरोवर में डुबकी लगाइ; जहाँ हंसरूप होइ मोती चुनलन, ओह धरती से एकर तेल-दीया, गुलाब आ सुबास नियर नजदिकाह नाता रहल बा। सतजुग का पहिला पहर में अनगुतहाँ का बेरा त एहिजा समुंदर लहरात रहल ह।

बाद में एकर कुछ भाग मलद-करुष कहाइल। दंतवक्र एही करूष क राजा रहे। जमदगिनी रिसी क अड़ार जमनियाँ क जवार-मंथार रहल। भगवान परशुराम जमनियां से लेइके पुरुब-पच्छिम सबँसे उत्तराखंड तक विराजसु। उत्तर-प्रदेश के गाजीपुर-बलिया उनकर असली करतब-धरती रहे।

एतने मत जानीं बेद-ग्यान के पहिली सोनहुली किरिन के लाली भोजपुरिये जनपद में फइललि। एइजे वैदिक-गंभीर विग्यान के गूढ़ बाति परगट भइली स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगिनि, ओम से ई दुनियाँ बनलि बा। (अग्निसोमात्मकं जगत्) ऋक्, आ साम, यजुः तीनि मूल तत्त बाड़न। 'ऋक्' आ 'साम' के काम हरदम आवागमन ठहरल। 'यजुः'-के दूइ भाग बा, 'यत्' के मतलब चले वाला, जू के अरथ-अहथिर। एह तरह से 'यत्' से वायु आ 'जू' से आकाश। एह सभई क सोकड़ (कोष) सुरुज-आदित में भरल जानीं। आदित का मूल सकती के नावँ गाइत्री ह। गाइत्री वेद के महँतारी मानलि बा। एह सकल मूल, माता क पहिल दरसन करे वाला मंतर-वाह (मंत्रद्रष्टा) विश्वामित्र जी भइलन। वेद के पहिल ग्यानी एह मुनी क तपोभूमि 'सिद्धासरम' एही भोजपुर जनपद का नाभ में रहे। आज का बगसर से जखिनी भवानी तक विश्वामित्र जी का तपोवन क गिरदा रहे। परधान जगहि जखिनी-भवानी के अड़ारे समझल जाई। बालमीकि जी का रामायण से एकर सदरथ होत बा।

विश्वामित्रजी के जच्छ, जच्छिनी जग्य करे में विघिन डालसु। उहाँ का कोशल नरेश दशरथ किहें पहुंचि के राम लछुमन के मंगलीं। राम-लछुमन भोजपुरी गावँन क लहरि लेत बलिया लांघि आगे बढ़लन आ गंगा-सरजू के जहाँ संगम हिलोरत रहे ओही सामने गंगा पार भइलन। कारो महादेव किहें ओह समय में गंगा रहली। विश्वामित्र जी का तपोवन में हजारन रिसी, तपसी, बेदुवा पंडित आ बिदारथी रहसु। गुरुकुल में एहिजा सभ वेद विद्या के ग्यान सिखवल जाय। राम लछुमन के विश्वामित्र महाराज एहिजे गूढ़ ग्यान दिहलन। 'बला', 'अतिबला', 'जया', 'विजया' विद्या बढ़वलन। एहिजे वेदशिरा रिसी क कुटी रहे। एहिजे तप कइके तपोवन का तलाब में नहइला से उनकर पाप-पराछित छूटल। दुरवासा का सरापँ से उनकर मुँह बाघ क भइल रहे। एह तलाव का नहइला से वेदशिरा जी सुघर सरूप पा गइलन। ओही तालाब का नावँ पर अघसर, आ बाघसर (ब्याघ्रसर) से बगसर बनलबा। भिरगू मुनि एही बलिया में गंगा किनार पर तप कइके विसनो-भगवान का छाती में लात मरला का पाप से टुटलन। दरदर मुनि के तपभूइँ एही जगह पर रहे। लोगन में ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा मशहूर बा कि दुरबासा के कनेठी देइ के उनकर दिमाग ठंढा करेवाला बाभन किसान एही बलियां का पॉजर में कहीं गंगा किनार क रहे।

लोक-गाथा, पर विचार कइला आ इतिहासके पोथी उलटला से पता चलत बा कि भोजपुरी जनपद में परधान रूप से हरदम बाभंन-धरम आ वेद-मति के पताका लहराइलि। बउध-धरम भी अगल-बगल कुछ छाप डललसि, बाकी पुरुबी, दक्खिनी आ पच्छिमी सिवान पाँजरे भर में। एहिजा शिव, दुरगा (शक्ति) के उपासक लोग बहुत पहिले ले जमल रहल। कारण ई बा कि एह इलाका का लोगन क विचार पोढ़ होला। लोग छनमतिया ना होखसु, मिरिग-टिशुना में उनकर अकिलि बहुत मांके ना। पुराण-काल से आगे बढ़ि के इतिहास का नयाजुग में पहुंचीं। इतिहास के पोथी के पन्ना उघारीं त रउरा अचरज क बाति लउकी। चन्द्रगुप्त आ आशोक क नावँ के नइँखे जानत? वउधदेव महराज के, भोजपुरी सिवान का सटले फलगूकिनार पर उरुवेला का वन में पीपर का फेंड़ तर बोध भइल आ कल मिलल। बउधदेव के जनम-धरती लुंबिनी, उनका उपदेश क पहिला खेमा मृगदाव-सारनाथ-रिसि पत्तन, मुकुति-भूइँ (निर्वाण भूमि) कुसीनारा-कसियाँ,, तीनों नामी बउध तीरथ भोजपुरिये जनपद में पड़ेलनि।

भोजपुरी आचार विचार (संस्कृति) के केशरिया झंडा उत्तर में मंगोलदेश का तुनहुबांग पहाड़ी से लेइ के कोरिया, जापान, तिब्बत, पुरुब में चीन, बाली, मलय, जावा सुबरनभूमि (बरमा), दक्खिन में सिंहलदेश (लंका) आ पच्छिम में ईराक, इसराइल, वलख-बुखारा, कूचा तक फहराइल।

चन्द्रगुप्त पहिला भोजपुरी राजा भइल जे गिरदा बान्हि के भारत पर अखंड राज कइलसि। उनका समय में भारत में निचाट दक्खिनी टूक छोड़ि सवँसे भारत एक हो गइल रहे। भोजपुरिये वीरन का मदति से काबुल-कंधार तक हँकड़त आ सींघि रगरत चन्द्रगुप्त पहुँचल आ ताल ठोंकि दिहलसि। पछिंमहा राजा सिकंदर के सेनापति सेलूकस ओकरा के लड़ाई खातिर ललकरले रहे। भला ई भोजपुरिया वीर बुनेला, पिपलीवन का मोरियन के नगीना, लाल आँखि देखावल सहे? भारतमाई का शान क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचाव करे खातिर आपन तलवार चमकावत शानियल सिंह मयदान में पहुँचि गइल। अफगान देश का कूर खेतन में भोजपुरी वीरन के तेगा बिजली नियर चमकि उठलि। एह हजारन बिजली क चमक आ गरगराहटि से जवन सिपाहिन के आँखि मुदा गइलि। हमार जवान सेलूकस के मोंछि कबारि के दम लिहलन। उनका पोंछि दबाइ के भागे के परल। एतने से जीव ना बाँचल। सेलूकस भोजपुरी राजा के आपन बेटी तक बियाहि दिहलसि। संसार के दूनो नामी धरम बउध, आ जैन एह जनपद में फइलल। बउधदेव, महावीर का ग्यांन के गंगा-जुमना पहिले एही भोजपुरी गावँन के पावँ पखरली जा।

मोरियन में अशोक का अवतार से भोजपुर के के कहो, सबँसे देस आ संसार निहाल भइल। सिकंदर तलवार लेइ के दुनियाँ जीते चलल रहे, बाकी महा तपसी मुनि दंडायन का देस में आइके ओकर अकिलि मां कल आ अगियाइल भुलाइ ठंढा हो गइलि। अशोक पांचों जवन-राज, पच्छिमी एशिया, अफिरका, मिसिर सगरे असपताल बनववलन। धरमसाला कायम भइल, फेंड़ रोपाइल, बेमार लोगन के दवाई बँटाइल। जवन लोग र मउवति के मसाला आ सनेस लेइ के कालरूप में आइल रहे। ओइजा भोजपुर उनके जिनिगी के अनमोल सीख आ सवतुक, कल-थेग्र दिहलसि। दुनियां का इतिहास में सुरुज का जगमग जोति नियर तपे वाला अशोक चन्द्रगुप्त के पोता रहल।

भारत में पंचायत-परथा के पहिला नमूना भोजपुरी जनपद में बनल। शाकवंश, कोलियराज घराना, मोरियगण, आ मल्लन के साजल-सवाँरल तसबीरि ओकर नमूना मानल गइल बा। शुंग-वंश के बाभन सेनापति आ राजा पुस्यमीत एही भोजपुरी सिवान में गंगा का दियारा में भोजपुरिया वीरन का बल से चढ़बाँक जवनराजा मिनांदर का पीठी धूरि लगा दिहलन। भोजपुरी लोगन से लड़िके ओकरा भरिमुँह माटी लिहले भागे के परल। एतने से सबुर मत करीं। बिदेशी शक आ कुसान जब देश के नाँकनदम कइलत त, भारशिव नागवंशी राजा लोग भोजपुरी-सिवान में एहिजा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवानन का बल से आपन छावनी कायम कइके उनके चहेटलन। अपना जीति का खुशी से दस बेर ऊ लोग दसगो असमेध-जग्य कइलन आ एही काशी में गंगा-किनार पर बाबा विश्वनाथ का धाम में बुड़की मरलन। दशासुमेध घाट ओकरे गवाही देति बा। छठवीं इसवीं में गुप्तराज्ञवंश का अंतिम समय में बगसर का चारो ओर गुप्तवंशी राज रहे। बाभन-धरम, शिव आ दुरगा क पूजा होत रहे। एकर सबूत एगो पत्थल पर खोदल मुजिगर लेख 'ब्राह्मी' लिखावट में मिलल बा। (एकरा पर 'एपीग्राफिया इंडिया' में नामी विदमान डा० अनंत सदा शिव अल्तेकर के लेख निकलल बा)। लेख पटना-संग्रह घर (म्यूजियम) में राखल बा।

एह किसिम के आजादी के लड़ाई बहुत बेर एही जनपद का ब्रूम पर लड़िके जीतल बा। गुप्तराजवंश क तेज, आ उनका जस के लाली एहि जे तिरबेनी का डँड़ार से शुरू होइ के गंगा आ सोन का संगम का बीच में चमकलि। परतापी राजा वीर विकरमादित्त एही भोजपुरी वीरन क सेना साजि सक लोगन के पिठियाइ के देस का सिवान से बहरा कइलन। हिंदू [illegible]श लांघि, बलख-बुखारा धाँगत भोजपुरी-जवान आमूदरिया में आपन [illegible]ारना धोवलन आ केशर का कियारिन के सुबास लेत घोड़न पर सवार [illegible]गिर[illegible]ा घोरियावत दिल्ली पहुँचि अइलन। मेहरवली का लोह-खंड में चन्द्रगुप्त क[illegible]ोह विजय क जस-कथा टाँकलि बा। 'शकारि' वीर बिकरम राजा क छावनी गंगा किनार पर 'सकराडीह' (गहमर का पंजरा) भी लोगन में मशहूर बा।

हूण सभके दरेरा देत फिरत रहलन। सबँसे एशिया महादेश हूणन से थरथुरा गइल रहे। भोजपुरिया वीर ओहू लोग के कान मललन आ स्कंदगुप्त के अगुवा बनाइ उनके धकिया दिहलन। हूणन के मुँहे करिखा लागल आ ऊ लोग पोंछि सटकवले भागि निकलल। भीतरी सैदपुर में लाट पर एकर जीतिकथा संछेप में टाँकलि बा। चीनी राहगीर हुवेन संग भोजपुरी सिवान के तसवीरि देखत, एइजा का समाज से सीखत-गुनत राजा हर्ष का दरबार में पहुचल बा। मोहोशोलो-मसाढ़ में (आरा जिला में) ओकरा ठहरला क चरचा इतिहास में लिखल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शेरशाह एही भोजपुरी शाहाबाद का जगल क शेर रहे जेकरा गरजला से दिल्ली के राजसिंघासन दहलि गइल। शेरशाह मामूली किसान के लाल, झोंपड़ी में जनमल; ओकर लाली अइसन चमकलि कि अबहीं ले सवँसे भारत मे केहू ओकर मोकाबिला ना कइ सकल। शेरशाह जब मूँसारोईं वीर बुनेला भोजपुरिया जबानन के दल साजि के पच्छिम मुँहे डेंग बढ़वलसि तब दिल्ली काँपि उठलि। मारल मरद ताके ना। चउसा में गंगा किनार पर जे भोजपुरियन से पटकाइल आ गंगा में कूदि के जीव बँचावल ओकर कहाँ हिमाकति रहे कि ठहरे। फरगाना का लंगड़ सरदार के बंशधर आ बाबर के सपूत बिना तोबि दगले आ गोली बारूद छोड़ले चुपंक-गद्दी छोड़ि भागल से इरान पहुँचि के लुकाइल। शेरशाह बीर-धरती राजसथान आ पंजाब रउँदत मालवा तक आपन झंडा गाड़ि दिहलन। भोजपुर का जवान क भुजबल आ अकिलि देखीं कि दिल्ली दखल कइके भारत के सिरताज हो गइल। टोडरमल, शेरशाह के खरादल हीरा रहलन जिनका नकशा पर अकबर का राज क तसबीरि बनलि, शासन में सुधार, जमीन क नाप आ मालगुजारी ठीक भइल। शेरशाह परजा पालक राजा रहलन। मड़ई ले निकलि के महल में पहुँचलो पर ऊ जांगर चलावे वाली जनता के ना भुलवलनि। उनका समय में कलकत्ता ले पेशावर तक सड़कि बनलि। सड़कनि का किनारे फेंड़ रोपाइल आ धरमशाला, इनार बनल। घोड़ा से डाँक ढोवे क इंतिजाम कइल गइल।

पिपरा मिसिर गउतम गोत्र, बाभनन के सिरताज भूपसिरोमणि महाराजा बलंवत भोजपुरी जंगल के सेर रहलन। छानवे परगना में बलवंत का तेज क सोनहुला चिराग जरल। बगसर ठोरा नदीआ सरेंजा, मंगराव-अवँती तक उनका राज क पुरबी गिरदा रहे।

सरेंजा क पुरान नावँ सरवँधा ह। कवनो समय में अवधराज क सरहद एहिजा ले आइल रहल। महाराजाधिराज काशी नरेश बलवंत के पिता पं. मनसा राम (जिनके १७१७ में राजा क सनदि मिलल) का साहस आ अकिलि के बलिहारी जानीं कि तूफान-बवँडर का समय में; जब बिपति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बादल गड़गड़ाइ के करेजा कंपावत रहे, अपना देश आ जनपद के दिन पलटि दिहलन। मुसलमान शासन के जूवा कान्हि ले फेंकि, ओह लोग के धकियाइ राजा हो गइलन। काशी में जहाँ भादों क अन्हरिया छवले रहे बलवंत नियर तेजमान पूत जनमते अँजोरिया उगि गइल। बुताइल चिराग अचके में अपने आप बरि उठल। कइयट, कबीर, रामानंद-तुलसी का काशी में फेर सनातन धरम के झंडा लहराये लागल।

भोजपुरे जनपद में बलिया का कवनों कोना में गाँग किनारे बउधपंडित कुमारजीव क जनम धरती रहे। जापान बउधविदमान कुमारजीव के आजुवो भुलाइल नइँखे। कबीर एही खानि क हीरा रहलन। एह जुग में आजादी के पहिला शहीद, बारिकपुर में शंखफूँकि गदर मचा देवे आ पलटनि के बागी बनावे वाला मंगल पांडे के, के भाई ना जानत होई कि एही बलिया का पास क रहनिहार रहलन। बाबू साहेब वीर कुँवर सिंह अपना अस्सीबरिस का बुढ़ती मे तेगा उठाइ के आजादी के लड़ाई क अगुवा भइलन आ फिरँगियन का छाती पर दालि दरि दिहलन। भोजपुरी बुढ़वा सरदार से लड़े में ओह लोग क दांत-रंगा गइल आ छट्ठी क दूध इयाद करे के परल। आजादी का आखिरी लड़ाई क कवन तमाशा कहीं? शाहाबाद बलिया आ गाजीपुर का बलिदान का आगा नेहरू जी का मांथ नवावे के परल। हैलेट, नेदरशोल डायर के भी माँत कइले रहलन। भोजपुरी वीरन के केतना नमूना देखावल जाय। गाजीपुर में शेरपुर, बलिया, में नरहीं से रेवती तक हजारन बलिदान भइल। बलिया के शेर चित्तू पांडे गजब कइलन। डुमरांव में भी पांच जवन शहीद भइलन। इहे हाल कमबेश आजमगढ़, गोरखपुर क भी समझीं।

आज का जुग में भी एह खानि से केतने हीरा रतन निकललन जिनकर मोल आँकल कठिन बा। विद्या, ग्यान, राजनीति, साधुताई जेनिये नजरि डालीं लालन के लाली चमकि रहलि बा। गणित के पंडित आ विदमान् सुधाकर दुवेदी, डा० गणेश, हिंदी के महारथी रामचन्दर शुकुल, विद्या-समुंदर पं. रामवतार शरमा, डा० सच्चिदानंद सिनहा, देशरतन डा०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजेन्द्र प्रसाद महापंडित राहुल जी, आ (संस्कृत) संसकीरित के विदमान किसान-भगवान जननायक दंडी स्वामी सहजानंद सुरसती, भोजपुरी-जनपद के लाल रहलन जा जिनके देश-विदेश जानल। पं० सदल मिसिर, पं. सकलनरायन शरमा, पं. रामदहिन मिसिर, शिवपूजन सहाय भोजपुरी-सागर के निकलल अनमोल मोती रहलनि हँ जा।

भोजपुरी एही जनपद का वीरन क खेहल-पोहल, साजल-सवाँरल वीर भासा ठहरलि। कुछ लोगन का भरम बा कि मालवा से परमार राजपूर लोग का आरे-जिला-भोजपुर नगर बसवला का बाद से ओहिजे भोजपुरी चललि, फइललि आ सरनामी भइलि। पुरान इतिहास के छानबीन कइला पर भरम क ई कुहेस तनिके में लोप हो जाई। नदी आपन सिवान बदलति रहे ले। सवँसे बलिया आ उत्तरी शाहाबाद छपरा क सिवान केतना बेर कहाँ से कहाँ भइल बा। शाहाबाद के बहुत भाग सोननदी के चालल जानीं। कुछ लोग क विचार बा कि सोनपा का नियरा होइ के सोन बहलि आ गंगा में मिलल। ढकाइच का नियरा बहला क परगट सबूत जनाला। कबहीं फतुहा का पँजरा सोन-गंगा क संगम भइल रहे। जवन-राहगीर पटना के गंगा-सोन का संगम पर बसल लिखले बा। अइसहीं भोजपुर के नवरतन दसवीं-एगरहवीं ईसवी में गंगा का किनार पर रहे। करमनाशा बरुनाटीसन होत कोठिया गांव का सटले गंगा में मिले। बहुत पंडित करमनाशा के सोन क शाखा मानेलनि।

भोजपुर नगर का नावँ पर भोजपुरी मानल बे ओरिमांथ क बाति समझीं। मालवा से भोजवंशी राजा लोगन का आवे ले बहुत पहिले से भोजपुरी वैदिक संसकीरित का मानसरोवर से निकलि के मंद-मंद चालि से ताल-सुर-लय आ धुन में गावत बहति रहे। धुना, लय, सुर, गति से साबित होत बा कि वैदिक भासा का मिलहुर, खेझरा घँसाइल-रगराइल रूप से (वैदिक अपभ्रंश) निकललि बा। 'भोज्यपुरम्' से भोजपुर बनल बा। भोजवंशी नरेश लोग का जमाना के पाइ के एकर बढ़ती जरूर भइल होई। उनकर विदमान नवरतन एकरा के खरदले मंजले होखसु इ त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभाविक बा। भासा झरना के बिमल बहता पानी ह। एकर साज-सवाँर त होते रहेला। एह से समझे के चाही कि भोजपुरी वैदिक-परिवार के ठेठ सरूपवाली गवँई बेटी ह जे आज भोजपुरी-जनपद के रानी बनिल बा। भोजपुरी से हमन का महँतारी का गोदी में दूध पीये का समय से नाता बा। जे झोंपड़ियन में हमनीं के पालल-पोसल, हलरावल-दुलरावल, आपन अमिरित का सामान दूध पिया के करेजा पोढ़ कइल। धरती पर डेग धरे आ छाती तानि खड़ा होखे सिखावल, खलक में दुनियां-जहाँन में हमनी के माँथ ऊँच कइल, ओकरा के भुलावल कइसे जाय? ओही क लहू रग-रग में दउरि रहल बा। भोजपुरी भाइन के मोंछि अइँठि के चले इहे भोजपुरी माई सिखवलसि। भोजपुरियन के करेजा पसेरी भर क होला अउ गोजी टिकासन ले ऊँच पोरसा भर क। भोजपुरी वीरन के आँखि देखाइ केहू निबुकल ना। जे रगाइल ओकरा के रगरि के भोजपुरिया ठंढा कइलन। गहुँवन रोरी बिगला आ ठेंगा से ठोंकला पर भागे ना, आपन फट काढ़ि कै ठाढ़ हो जाला। भोजपुरी गीत, भोजपुरी-लोक कथा, लोक-गाथा, कहाउति आ मुहावरन में खोजीं टकटोरीं त एकर बहुत उदाहरन भेंटाई। भोजपुरी कहाउति सगरे मशहूर बा कि:-

"रहीला रन-बन खाई ला मकोहि,
सात हुँड़ार क चरबन होइ;
बाघ मारि-मारि करी ला इयारी,
सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी।"

हिंदी भासा भी भोजपुरी कहाउति, शबद आ मुहावरा से आपन फुलवारी सजवले बा। शवदन में जुगन के इतिहास छिपल बा। हम आगे एकर नमूना पेश करब। कुछ कहाउति भी दिहल जाई। लोक-सहित्त त जनता का दिल के जोति आ राग ह। एकर लोग पाँच भाग कइले बा। लोक-गीत, लोक-कथा, लोज-गाथा, लोक-नाटक, लोक-सुभासित। भोजपुरी लोक-कथा में कुछ खास खूबी बा। ई खूबी आठ भाग में बँटल बा १- प्रेम क पुट, घोर सिंगार क भाव आदिमि का मूल सुभाव क तसबीरि, मंगल के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव, संजोग में अंत, भूत परेत के भरमार, ललक के भाव, सनातन सुभाव के बरनन। भोजपुरी कहनी में रउरा सबसे बड़ खूबी ई पाइबि कि एकरा में भद्दा-फूहर सिंगार के बरनन नइँखे।

शबद-मुहावरा-कहावतनि के कुछ तसबीरि देखीं आ सवाद लीं। उजबुक-बाबर बादशाह का आवे ले पहिले उजबेकिसतानी सरदारन का संगे ई शबद आइल।फरगाना में त उजबेक लोग बाबर का वंश क हजामति बनलहीं रहे, ओकरा डर भइलं कि दिल्ली से भी खेदाईं। एह से शासन में गोड़ जमि गइला का बाद मोगलिया राज में बीर उजबेक लोग क बोध करावेवाला शब्द मुगल परचार से बुरबकाही, मूढ़ता गवाँरूपन, क निशान बनि गइल। लोदीवंश का गवाँरपना, शासन के नालायकी वोगयरह से बहलोल लोदी का नाँव ले- भोजपुरी बकलोल शबद निकलि चलल।

हुँड़हा- हुड़ँहाई- हूणन आ बिकरम राजा का जमाना के शबद ह।

'बुद्ध'-मतलब-'ग्यानी' बाकी जब बउध-धरम देश से गिरि गइल। महायानी बउध साधुन केचालि-चलन देखि लोग बहुत घिरिना करल। ओकरा बाद अब ई शबद, गवाँर का बोध करावे वाला समझल जाला।

बखीर-रूसी भासा क शबद ह-वश्कीर से बनल बा।

बकसी (बख्सी) संसकीरित के बेटी 'उइगुर' भासा से निकलि के आइल बा। ई बउध 'भिक्षु' ब बिगरल रूपइ। 'ओनामासी ढं' शाकटायन का बेआकरण का पहिला सुत 'ॐ नमः सिद्धम्' क बिगरल रूप ह।

अब तक ले भोजपुरी में बहुत काम हो चुकल बा। सबसे पहिले भोजपुरी के महापंडित डा॰ उदयनारायण तिवारी जी 'भोजपुरी भासा आ सहित' पर अनमोल काम कइलन। तिवारी जी भोजपुरी दुनियां के 'पाणिनि' ठहरलनि। उनकर 'भोजपुरी भासा आ सँहित' पोथी ग्यान के समुंदर ठहरलि। डा॰ कृष्णदेव उपधिया, दुरगाशंकर सिंह, भी अनमोल काम कइले बाड़न।

कहानी, कविता का ओर त बहुत लोग झुकल बा, बांकी कुछ मजबूत गारा-मशाला क जरुरति बा कि भोजपुरी भासा क नेंव पोढ़ हों जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याकरण भासा क चाभुकि ह। भासा का गाड़ी के साजि के ले चलल ओकरे काम ह। आज एगो छोट चुनमुनवां व्याकरण क जरूरति लउकत रहलि ह। पं० रासबिहारी शरमा आपन ई पोथी लीखि के ओह कमी के दूर कइलन।

व्याकरण- केकरा के कहल जाला, ओकर काम का ह, ओकरा के कवन लाभ बा, ई जानल सभले जरुरी जनात बा। 'प्रति शाख्य' आ 'शिक्षा' में जइसे सिखावल बा कि वेद पढ़े का बेर कइसे बइठे के चाहीं, कइसे मुँह खोलल जाई, कइसे बोले के होई कइसे ना बोले के, अच्छरि केतना बाड़ी स, 'स्वर', 'व्यंजन' के का मतलब, -ओइसहीं (व्याकरण) बेयाकरण वेद का छव अंगनि में एगो परधान ह। एकरा में बतावल गइल बा कि 'कर्ता', 'करम', 'किरिया', 'समास', 'संधि' ई सभ का हउवे, कइसे बनेला, कवना किसिम के काम में आवेला। थोड़े में बेयाकरण विद्या के काम ह कि ऊ बोले आ पढ़े वालन के समझा दे कि शबद कवना तरह से बनेलनि। ऊ कवना ढंग से काम में ले आइल जालन। भासा का गाड़ी के ठीक ढंग से हांकि के अपना निसाने पहुँचा दिहल बेयाकरणे क काम जानीं। एही से बेयाकरण से भासा का गाड़ी क चाभुकि, पयना मानल जाला। एकर नावँ 'शब्दानुशासन' एही से धराइल। जइसे तेल-सन धूरा में लगवला पर आवँनि घूमि के गाड़ी के आगे बढ़ावे ले ओइसहीं भासा का गाड़ी में आवँनि रूपी विचार-बाति के बढ़े-सरके में बेयाकरण तेल-सन का काम देला। बेयाकरण ओतने पुरान सनसतर ठहरल जेतना वेद के पोथी। बेयाकरण के पहिला पंडित बिरहसपति महराज भइलन। इन्दर महराज सीखेपढ़ेवाला उनकर पहिलका चेला। संसकीरत भासा में पाणिनि ले पहिलहूं गहराई ले छान-बीनि कइ के बहुत लोग बेयाकरण क पोथी लिखले रहलन जवना के अत्रि, आंगिरस, आ पिशालि, कठ, कलापी, गउतम, शवनक, छागलि, शाकटायन, भिरगू, बसिष्ठ, सकल आदि के नावँ पाणिनि महराज अपना पोथी में गनबले बाड़न। बाकी तीनि मुनी लोग-पाणिनि, पतंजलि कात्यायन, महंथ गनालन। प्राकृत भाषा में हेमचंद के वेयाकरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरनामी मानल जाला। बेयाकरण क झमेला केतना पुरान ह के बतावे- 'गोपथ-बाभन' का पोथी में एकर एगोकथा मिलति बा। सवाल भइल बा कि ओंकार के छान-बीन कइल चाहत बानीं। ई कवना धातु से निकलल बा? एकर परातिपदिक, लिंग, वचन, विभक्ति, 'प्रत्यय' का ह? स्वर, व्यंजन, विकार, विकारी क जीरहि ओइजे लउकत बा। निरुक्त भी यास्क मुनि क वनावल वेद क व्याकरणे ह।

आज भोजपुरी भासा जन्ता के माँजल-सवाँरल भासा ठहरलि। एकर सिंगार बहुत हो रहल बा। कगदही करेवाला गुनी पंडित लोग आपन कलमि चला के एकरा के धनी बना रहल बाड़न। अपना गुन-सहूर का बल से 'भोजपुरी' बोली से भासा क ताज पहिरलसि, रानी भइलि।

पोथिन का भासा आ बोल चाल का भासा में बड़ा अलगाव होला। पोथिन के भासा अझुराइलि होले। बाकी बोल-चाल वाली न सझुरल एकदम सुघर चिक्कन, झरना का बहता पानी का समान।

पोथिन के भासा एगो निसान पर पहुँचि के ठहरि.जाले बाकी बोल चाल के चलती, दुलरुवी भासा के चलती कबे ना घटे। समय पाइ के एकदिन ऊ एतना आगे बढ़ि जाले कि पोथिन के भासा के धकिया के अपने गद्दी पर जा बइठे ले।

भोजपुरी भासा क कुछ कहाउतिन के देखि के एकरा रस क सवाद लेईं।

दादा मुवलन दोहरवे हाथ लागल।
धन नावें हूँका पोशाक नावें जूता।
भूँड़ गाइ सदा कलोर।
हर ना जुवाठि अँकवारि भर क पयना?
बाभन वेद कोइरिये खेती।
तुरुक ताड़ी बैल खेसारी।
जवन छउँड़ी लगवलसि आगि उ बा कवरवे ठाढ़।
हाथ गोड़ सिरिकी पेट नद कोला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर हेंगा में जस-तस पगुरी में रंथ
नाती के गांती ना, बिलारी के झूला।
लजाइल लइका ढिढ़ुँकी टोवे।
देखन में बउरहिया आवें पांचों पीर।
देशी घोड़ी मरहठी जीन।
जहां पांचो पीर तहां अमिना सती।
"बकसऽबिलारि मुरुगा बाण होके रहिंहव।
न पँड़उस के बरहा बराई, न चलनी में पानी भराई।

प्रमोद कुमार दीक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम सुनीति बाबू के,
आपन विनय सुनाईं कइसे;
जे भासा कऽभारी पंडित,
विदमानन कऽ मुकुट शिरोमनि,
पूत सपूत बंग-धरती कऽ,
जहाँ रतन लालन क खानि!
का ऊ डह्हरि भुलइलन,
कहल-बतावल,
गौड़ महाप्रभु,
सिरि चैतन्नदेव आ-
रामकिसुन परमहंस सुरेमन,
जती विवेकानंद निपुन कऽ?
कवि-कुल-राजहंस विद्यापति,
सुरसति पूत-सुलायक;
नाथ रवीन्दर ठाकुर,
सुजन सुधरमी समदरसी का;
'गीतांजलि के
पढ़लो पर तऽ,
का जाने काहें ऊ;
बाड़न बनत अबूझ अजान
हमहूँ उनकर भाई हउवीं,
ओही एक बाप-माई कऽ।
एहं देस का,
धन-धरती सुख-संपत्ति,
विद्या-बानीं,
बोध ग्यान-गुन-सोकड़;
सभ में हमरो;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हक ओतने बा;
जवना तरे जइसहीं समुझीं।
इहे कहति बा मानवता आ-
सहज सनातन धरम इहे हऽ!
भाई का भाई के,
धकियावल चाही ना!
भाई के धकियवले,
हालि भइलि का;
रिखि पुलस्त का नाती,
सिव-सेवक तपसी बाभन कऽ?
बालि जुलुम कइलसि जब,
अपने सग भाई पर,
मुक्का मरलसि मेहरि छिनलसि;
धरम-बिचार तनिक ना कइलसि,
भइल नतीजा कि ऊ;
जान गवां अखड़ेरे।
गइल छोड़ि धन-धरती-धाम!
हकवे खातिर,
कुरुछेतर में;
कौरव-पाण्डव,
एके कुल कऽभाई;
जुटि लड़लन आपुस में,
रचलन समर महाभारत कऽ;
कठिन भयंकर भारी
मद गुमान इरिखावश!
अउरी अपना,
'कुल-प्रलिवार-हीत-नाता आ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीत-सुजन-संगी सभका के,
आगि लगाइ खउरलन!
बहल पवन चउवायी,
बढ़लि लवरिया;
फइलि गइलि सवँसे भारत में!
एतने नाहीं,
जावा-कबुज बाली;
श्याम-मलाया बरमा,
सेलीबिज जापान;
चंपा चीन सभे देसन से,
दूनो दल कऽ;
पछ पलाह करवइया,
आपन मदति मसाला लेके;
मोंछिया अइँठत,
समर भूइँमें अइलन;
अउरो-आपन,
बल-पुरुसारथ;
विद्या-ज्ञान-धरम-धन;
कारीगरी-कला-गुन;
सब कुछ एहिजे,
कलह-अगिनि का;
बरत लवरि में,
सहजे चउपट कइके;
जुटल फतिंगा नियर दीप का,
थोरे भर में जुझलन!
पूरुब ले ईरान-अरब-आ
मिसिर-सीरिया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलख़-बुखारा;
कूचा भा तुरुकी से,
राजा लोग फउदि ले आइल!
एहिजो अंधक, मेखल-दंडक,
वीर-विरिसनी कुल कऽ;
नवजवान मनसोख बिगारू,
बली ढीठ इनरिन कऽ दास;
ले हथियार खींसि में मांतल
रणचंडी कऽ,
भोजन सुरस बने खातिर के
आ जुटलन जल्दी से!
भइल नतीजा ई कि,
जतन कइल जुग-जुग कऽ;
विद्या-सुभ-विग्यान-ग्यान-गुन,
कारीगरी-कला-चतुराई;
सुख-संपत्ति धन-धाम धरोहर;
सब कुछ चउपट भइल देश कऽ,
वीर पुरुष कुल मारल गइलन!
भारत माई,
देखि दसा पुतन कऽ;
हाथ मांथ पर धइके,
केतना जुग तक विलखत रहली!

x x x

भासा सहज सुघर मूरति हऽ,
भीतर का भावन कऽ!
ई मानुस-हिरदय का,
राहज-मनोरथ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मांग-चाह-इच्छा के,
परगट करे बतावे ले!
बुद्धि-ग्यान-विग्यान-विलच्छन,
बिसय-बासना टिसुना सभकर;
सज तसबीरि उरेहि ओइसने,
जइसन कि ऊ होली सकमक,
लोगन के देखलावे ले!
ईहे मानुस के मानुस से;
ज़ोरि-बान्हि के;
नगद नेह-नाता में,
सुघर समाज बनावे ले!
मानुस सिर-जनहार परानी,
बे समाज कऽ,
रही कहां ऊ कइसे?
एही से बस सहज सुभावन,
गढ़ि समाज रुचि का अनुसार;
चाहेला सुख-सांति-चैन से,
रहल धरतिया ऊपर!
जनम-करम-गति,
रहन-सहन-गुन;
रुचि-आचार-विचारन का बल,
ग्राति बनलि दुनियां में;
देस-दसा-जुग का अनुसार,
साजि सिखा लोगन के;
सवतुक रीति-नेम शुभ,
सील-सनेह-सुमति-सुखवाला;
पुरुसारथ कऽ डहरि देखावत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन-महासमर में;
सुगति-सांति का,
नगद निसाना तक पहुँचावे,
विजय-धजा फहरावे खातिर!
सभ देशन में;
मानुस का समाज में;
हर जातीय दलन कऽ;
किसिम-किसिम कऽ;
बाटे अलगा,
रहन-सहन आ-
कुल-आचार-विचार!
बोली-भासा फरक-फरक बा,
केतने फरका रीति-रेवाज!
संसकोरित ले,
जनम भइल शुभ;
पराकिरित-पाली कऽ!
ईहें नाहीं,
उत्तर भारत वाली;
अउरी केतने भासा,
बंगला-गुजराती-पंजाबी;
उड़िया-असम-मराठी-कन्नड़,
ब्रजभासा-हिन्दी तक,
एकरे घर से;
पाइ कलेवा-खरची-पुरहर,
भइली सिजिल-सुघर-बरियार!
कबे-खोतनी-कबे तुखारी,
मंगोली आ कूची;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जावी भा कदंब तक,
मदति मसाला ले एही से;
आपन घर-दरबार सजवली!
हिंद-एसिया का भासा कऽ,
खोलि सनूखि उहां का;
जब देखबि जांचबि तऽ;
पता चली कि;
ओकरा शबद-खजाना भीतर,
बाड़न अबहूँ साठि सयकड़े,
संसकीरित के शबद सुघर सज,
घुलल-मिलल शुभ गुन झलकावत!
कहीं कहाँ तक कथा पुरनकी,
ओह महापंडित का;
बेवरा कुल्हि मालुम बा!

x x x

भासा-कथा बड़ी लमहरि ई,
भारी एकर कुल-बिरादरी;
सज से जेकरा,
रुप-शील-गुन;
सबतुक सेवा आ-मरजादा
सहज-ग्यान-विज्ञान सुरस के,
जानल-समुझल;
लगन-साधना-तप कऽकारज,
बहुते मेंही महिमा वाला!
एह डहरि के धइके चलले;
रउरा देखबि कि दुनियां में,
लोगन का रुचि गरज मोताबिक,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

केतने भासा आके सनमुख;
सरधा से कुछ सेवा कइली,
आदर पवली रहली सुख से!
बाकी त जानीं कि,
निकलल समय सरकि के सर सर;
घंटा बाजल पहरा बदलल,
बान्हि बिछवना आखिर;
गइली बिदा होइ ऊ अंते
आपन देन सुघर कुछ देके!
भारत देस महान् निपुन में,
उत्तर ले दक्खिन तक;
केतने भासा बाड़ी!
रहल सराहे लायक;
केतनन कऽ अबहूँ बा!
एहिजा बाड़ी,
केतने जाति सुलच्छन;
अपना लूरि-सहूर-ग्यान-गुन,
कारीगरी कला के,
प्रिय देसी भासा में अपना;
जुग-जुग ले जोगाइ के रखले!
अवसर पाके,
बहुत जुगन में;
जाति बाहरी,
भारत में अइली कुछ;
ओमें केतना,
नोंचि-बकोटि परइली,
केंतने रहली कइली राज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना भासा के जनता पर,
हथियारन का बल से बदली!
जब उखरल शासन कऽ झंडा,
उखरि गइल॰उनहूँ कऽ गोड़!
बाकी तबहूँ,
असर परल कुछ;
भासा-बोली,
चालि, चलन आ-
शील-सुभाव-विचारन कऽ!
मजिगरि खिचड़ी पाकलि
रुचे-पचे लायक सज छौंकलि!
दूइ जगन का-
मिलन समय में,
चउराहा मोड़न पर,
धरम-करम-गुन भाव-मरम कऽ,
गंगा-जमुना-सुरसति मिलली;
लोग नहाइल तिरबेनी में,
मन-बानीं-काया के धोवल;
फल पावल तीरथ कऽ!
पहुँचि अछयबट का छाया में;
सुहताइल आ मांथ बनावल;
निरमल-चित सरधा से,
परसादी ले;
सुमति-सांति-अमिरित कऽ,
गइल डहरिया धइले
अपना नगद निवास-निशाने!

x x x

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकी त हम,
हालि कहीं का;
अब का मनमोहक कलिजुग आ-
कली-छली नेतन कऽ?
जवन दसा लउकति बा सनमुख,
ओके देखले;
संहज बुझात इहे बाटे कि,
दइबे बेड़ा पार लगावसु;
दुसी देस का,
बेचारी जनता कऽ?
बहुते महँगा मोल चुका के,
देस सुतंतर भइल हमन कऽ!
आसा जागलि,
खुसी भइलि कि;
अब बानीं क़ऽ बान्हन टूटी,
पाई सभई हक बोले कऽ;
पढ़े-लिखे सोचे कऽ!
अपना भासा-भाव नगद के,
पाले-पोसे पनफावे आ-
साजे सरियावे कऽ,
सभके मिली सुघर मोका शुभ!
बाकी आजो,
रँगरेजी हमनी पर;
बरियाई लादलि बा!
ज़ंसकीरित के
जे माई दुनियां का,
ना जाने केतना भासन कऽ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लउँड़ी-दाई बना, किनारे,
घिरिनावश राखल बा,
झूठ बहाना रचि के!
जे जहँवे बटुरा के,
रचन बखेड़ा-टंटा;
ओकर आदर होता,
आपन हक-पद;
पावत बा ऊ सहजे!
केतनो गुनी सुलच्छन होखे,
बाटुर होखे;
ओकर कुल-परिवार,
तबों दबा के ओके;
जुलुमी शासनवाली,
नेति-नेम के,
अबो चलावल जाता!
राज-हुकूमति,
नेति-नेम कऽ;
बा लगामि जिनका हाथन में,
उनकर नियति साफ बाटे ना;
अपना मतलब में आन्हर हो,
ऊ भासा का रथ के;
दलदल में अँटकवले बाड़न!
सहज आजु ले,
बरिस पचीसन पहिले;
हम सुनले रहलीं कि;
भारी भासा-पडित;
निपुन सुनीति चटरजी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंगदेश कऽ राढ़ी बाभन;
देश सुतंतर भइले,
करिहन उचित नेयाव हमन का;
भोजपुरी भासा का साथ!
बाकी अब देखत बानीं कि,
तेल कान में डालि उहाँ का,
चुप्पी सधले बानीं!
केतने पंडित एहू घर कऽ,
अबो जमींदारी के;
जीयत राखे खातिर,
किसिम-किसिम कऽ;
फंद खड़ा कइ,
हमनीं के भरमावत बाड़न!
सभके बोलें कऽ हक बाटे,
सभई पावे आदर-मान!
एगो हमरे मुँह पर काहें,
ताला पोढ़ अलीगढ़ वाला?
साच कहीं त,
पंडित असल उहे हऽ
जे सभका के,
एक नजरि से देखे,
एक देस का सभ भाइन के,
जाने एक समान!
भारी महिमा वाला,
नगद देस भारत में;
दूर-दूर का भाइन के जब,
बूझि-विचारि उहाँ का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर जायज हक पद;
जीवन-गति वानीं बल;
सुख-मरजादा दिहलीं,
तब काहें हमनी के;
अबरू समुझि दबावत बानीं?
तमिल-तेलगू मलयालम आ-
कसमीरी-गुजराती,
कन्नड़-उड़िया;
निपुन मराठी-बंगला,
सिजिल मैथिली,
नेवारी-आसामी,
सभकर आदर कइलीं,
तब कारन का,
दूइ नजरिया!
दूइभाव कइला कऽ?
सभे लइकिया,
प्रिय भारत माई कऽ
उनकर सगी बहिनियां!
केहूके त,
हीरा-मोती देइ उहां का;
महल-अँटारी में बइठवली,
केहू के अब,
दुलम मड़इयो कइले बानीं।
दू बहिनियां,
भोजपुरी लछिमिनियां;
देंवि सती सीता अनुसूया,
वीर सुरेमन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल नगीना केतने,
समय-समय से पैदा कइके;
उनका भा अउरिन का,
मरजादा के रखलसि!
भोजपुरी हऽ,
भोजपुरिया वीरन कऽ;
तेज-जोतिमय भासा-बानीं,
जे चढ़ि ठनकलि हरदम
ठेंगा-गोजी;
तीर-धनुस आ-
तलवारन का बीच!
भोजपुरी के,
आरे-बलिया गाजीपुर आ-
चंपारन-सारन-आजमगढ़,
गोरखपुर-बस्ती-देउरिया;
आधा रांची-सवँस पलामू,
मिरजापुर कुछ काशी;
एतना चुनल जिलन कऽ,
आठ करोड़ लोग बोले ला!
भोजपुरिये भाइन का,
त्याग-लगन-सेवा-पुरुसारथ;
शुभ आचार-बिचारन से,
मांथा ऊँच रहल भारत कऽ;
हर जुग में मोंका-मोंका पर!
जबे देश पर संकट आइल,
ताल ठोंकि झट;
भइलन ठाढ़ वीर एहिजां कऽ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममता मोह भरम आलस से,
रहि बेलाग दूर ऊ;
माँथ देइ मरजादा रखलन,
सान-सीवं क झंडा;
कवे झुके ना दिहलन।

X X X

एहिजे सहसारजुन कऽ,
सुघर सहसपुर-
सहसरावँ में,
रहे निपुन रजधानी!
एहिजे रहे राज सुखदायी,
निपुन गाधि राजा कऽ!
एही शुभ धरती पर,
परम पवित्तर सुघर-आसरम;
रहे सिद्ध जमदगिनि रिखी क!
एही भोजपुरी माई कऽ,
लाल निराला;
परशुरामजी रहलन!
अपना कोंखी,
वीरन के जनमावे वाली,
एही नगद धीर धरती पर,
सानी राजा सहसारजुन से;
वीर सुरेमन तपसी ग्यानी,
परसुरामजी समर ठानि के;
बापा बैर चुकवलन!
एहिजें भिरगू मुनि कऽ,
पुन्नि-थासरम,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरदरमुनि कऽ अड्डा।
गंगा-सरजू-संगम पार,
एही भोजपुरी तीरथ सुभ;
प्रिय बगसर का,
दक्खिन ओर कुछ दूर आगे,
सघन सोहासुन जखिनो-वन का,
सिद्ध-आसरम.
विद्यागढ़-गुरुकुल में;
तपसी सिद्ध महामुनि ग्यानी,
विसवामीतर जी महराज;
राम-लखन के सिच्छा दिहलन,
बला-अतिबला;
दूनो सुभविद्यन कऽ!
एही भोजपुरी-छेतर में,
महापुरुस मुनि बउधदेव कऽ;
जनम धरतिया,
सुधर लुम्बिनी बाटे!

x x x

एहिजे भोजपुरी-छेतर का,
सटले पंजरा;
सब्रतुक दानी,
राजरिखी प्रिय 'गय' का;
जग्य-भूईं तप-धाम गया में-
जेकरा पच्छिम;
भोजपुरी भासा परधान,
-ग्यान मिलल उनका के;
पहिल धरम उपदेस सोहासुत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउद्ध-धरम कऽ एहिजे;
भोजपुरी-मिरगावनवां में,
पहिले पहिल उहां का;
रिखिपत्तन-कासी में दिहलीं!
सहज सुगति निरवान उहां कऽ,
एही छेतर-भीतर;
धुनी मल्ल-वीरन का,
रोब-सान वाली रजधानी;
कुसीनगर में होखल!
एहि जे पहिले,
रहलन धुनी वीर कारूष;
साहाबद जिला का,
गांग किनारा वाला;
सहन उत्तरी भाग सुधर में!
ऊ दक्खिन वासिन से,
निपुन उत्तरापथ कऽ;
रइछा करसु प्रेमसे सज से!
त्यागी-तपसी,
गुनी जाति बाभन आ-
बाभन-धरम विलम कऽ,
रहलन मदतिगार ऊ;
वीर लड़ाका कट्टर!
एहिजे रहे राज सज,
दंतबकर राजा कऽ!
महापुरुस मुनि ग्यानीं,
संत अराड़ रहसु बनवां में;
कहीं पास आरा का,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां जाके;
मुनि गउतम सिद्धारथ,
गूढ़ ग्यान कऽ;
पहिली सिक्षा पवलन!
इहवें सहसरावँ में,
रहे बनल आराम सजीला,
एक हजार भिक्खु लोगन का;
भजन-ध्यान-तप साधन खातिर!
एहिजे दूसर,
सुघर बउध असतूपनमूना;
रहे बनल मनमोहे लायक,
पोखरा भीतर सजगर!
प्रियदरसी राजा असोक कंऽ;
चंदनपीर पहाड़ी वाला;
लेख अबो कायम बा,
जेकर नगद सबूत!
एहिजे कपासिय[1] वन भीतर,
बउधदेव मुनि ठहरल रहलन;
समय पाइ के जहवां,
बनलन बउध-विहार कई गो!
इहवें ऊ आराम नगरिया,
मजिगर बउध-मठन कऽ;
जेके पाछे चलि के,
लोक पुकारे लागल आरा[2]!

टि० १. सहसरावँ-मंडल का कपसियाँ गावँ

२. अबके बक्सर जिले का राजपुर थाना-भीतर सगरावँ गावँ जहाँ कभी बौद्ध धर्म संघा राम था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजे संघाराम गावँ आ-
गावँ निपुन अंगार[१]।
गूपुत-वंश का राजा-
विसुन-गूपुत कऽ,
नगद छावनी खेमा;
जिनका के अब,
लोग पुकरारत बाटे;
प्रिय 'संगरावँ' बउध-धरमी आ
शिव-धरमी 'मँगरावँ'।
एहिजे पोढ़ पुराना,
किला पहाड़ी,
सान-सीवं-मरजादा वाला,
वीर-सुरेमन राजा;
रोहितास कऽ,
रोहितास गढ़;
साहाबाद जिला में,
सोन नदी का पच्छिम;
सहसरावँ ले बारह कोस!
पकड़ि डहरिया,
चउरासी में कवनों;
जब जे पहुंचल एहिजा,
सरन देह ई रइछा कइलसि;
रखलसि धरम-नेम-मरजादा!
सिवधरमी राजा शशांक कऽ,

---

१. वहीं राजपुर थाने का मँगरावँ गावँ जहाँ से चौ० बृजमोहन राय द्वारा दिया गया ६ठीं शदी का द्वितीय विष्णु गुप्तकालीन लेख मिला हैं जिस पर डा० ए० एस० अलेकर का सचिग्राफिया इंडिका १९४० में लेख निकला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिक्का देत गवाही बाड़न
बस अइसन के,
गूढ़ पुरनकी कुछ बातन कऽ!
उड़िया देस निवासी,
निपुन तुंगवशी राजन कऽ
नगद-निकास ठावँ ईहे हऽ!
जनम-सोत बुनियाद पुरन की,
करुष-बंश का खरवारन भा-
चेंरो-ओरावँ जातिन कऽ!
खरवारन का नायक,
प्रिय परताप धवल कऽ;
संबत बारह सइ पचीस कऽ,
लेख पुराना;
परबत ऊपर,
फुलवारी घाटे मिलि;
सदरऽथत बा,
एह गूढ़ इतिहास-कथा के!
एहिजे मोहो-सोलो;
महासाल भा-
अबका गावँ मसाढ़ सुघर का;
लेठदीप[1] वासी राजा कऽ,
बनवावल असतूप विचित्तर;
बउध-मुनी का धातु भाग पर!
गावँ मसाढ़ सुघर में,
चुल्लवग्ग का लेख मोताविक,

टि० १. भगवान बउधदेव का धातुभाग खातिर कुशीनगर पर चढ़ाई करने वाला सात राजन में एक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कासी-कीटा गिरि में चलि के;
बद्दुधदेवजी
नगर आलवक[1] अइलन;
अउरी ओहिज्जा;
ढीठ जच्छ एगो कऽ;
मान हेठ कइ,
चेला नगद बलवलन ओके!
एतने नाहीं,
देखि नगर के;
सुघर सोहासुत,
भजन-साधना लायक;
आपन चतुरमास सोरहवां,
ठहरि बितवलनि सुख से!
खोजी पंडित,
जानकार इतिहास कथा कऽ;
सोधि बतावेलनि कि,
उहे नगरिया हउवे आरा!
ओही, कुल-पीढ़ी-पुरान-पद;
जाने वाला;
विदमानन का मति मोताविक,
आरा-साहाबाद जिला का;
केसपुत्त-केसठ में,
रहे आसरम परम पवित्तर;
संत सुरेमन ग्यानी,
मुनि आराड़-कलाम निपुन कऽ

१. आधुनिक आरा ही आलवक हैं जहाँ वुद्धदेव ने अपना सोलहवाँ चतुर्मास बिताया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजे वीर सुरेमन,
भोजपुरी वीरन कऽ नायक,
सेरशाह क जनम धरतिया!
बगसर ले कुछ पच्छिम,
पास गावँ चउसा का;
भोजपुरी वीरन का बल से,
शानी शेरशाह सहजे में;
हरा हुँमायू का सेना के,
जाइ बइठलन;
राज सिंहासन पर दिल्ली का!
एहिंजे जिला सुखी सारन में,
अल्लकप्प[1] क 'बुली'[2] बहादुर,
छतिरी राजा,
बउध मुनी का धातु खंड में;
भाग जथारथ आपन,
लड़ि के पावे वाला!
एहिजे जैथर[3] गावँ,
जहवाँ मुनी गंगेसर देव;
नीमिसार से आके बसलन,
आपन विजयधजा फहरवलन!
आगे चलि जहवां से,

टि० १. छपरा के क्षत्रिय राज्य

२. एक बहादुर क्षत्रिय जाति।

३. छपरा जैथर (जय-स्थल) जो कश्यप गोत्रीय सरयूपारीय ब्राह्मण पंडित मुनि गँगेश्वर देव का पूर्वी देश में आ बसने का स्थान था और जिस मल स्थान से उनके वैशज ब्राह्मण पूरब में फैले। वेतीया का दानशील राज्य जैथरिया वंश का ही मुर्धन्य रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैथरिया बाभन लोगन कऽ,
वंश बढ़ल उत्तर में पसरल!
राज बेतिया
ओकर सुघर् नमूना;
दान-पुन्नि-परमारथ,
सुजस वीरता वाला!
जवान कुल कऽ,
बागी वीर नरेस;
फते बहादुर साही,
भारत का आज़ादी खातिर;
अंगरेजन से लोहा लिहलन,
दर-दर ठोकर खइलन;
तबहूँ मांथ झुकवलन नाहीं!
भोजपुरी हऽ
शाकिय-मोरिय-कोलिय-गण आ.
वीरमल्ल लोगन कऽ भासा!
शुंगवश के,
रोपे-थापे वाला;
ऊ बाभन सेनापति,
पूस मितर[१] बलवान;
भोजपुरी वीरन कऽ,
मदति पाइके;
भोजपुरिये सिवान में,
गंगा का दीयर में;
सहकल जवन-नरेस,

टिं० १. पुण्यमित्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीर धुनी चढ़बांक;
प्रिय मिलिन्द[१] का,
पीठी धूरि लगवलन!
भोजपुरी वीरन से,
लड़ि के ओकरा;
भरि मुँह मांटी लिहले,
परल तुरत-भागे के!
सबुर करीं मति,
बस एतने से रउरा!
सक-कुसान जब;
एह देस कऽ
नाकन दम कइलन तऽ,
नाग वंश कऽ
वीर भार सिव-राजा;
भोजपुरी-छेतर में,
आपन चौकी कायम कइके;
एहिजा का वीरन का बल से,
उनके दूर चहेटि सहज में,
कइलन जग्य अनेकन,
गंगा का किंनार पर!
जेक़र खास गवाह निपुन सच,
दसासुमेध[२] धाटि कासी कऽ!
राजा वीर विकरमादित्त,
एही भोजपुरी जुवकन कऽ

टि॰ १. यूनानी राजा थिमांडर।
२. 'अयंकार युगीण भारत' डा॰ का॰ प्र॰ जायसवल के अनुसार दशवार भारथियों के जग्य करने का स्थल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउकस सेना साजि सान से,
सक लोगन के;
पिठियवल आ-
खेदि देस ले बहरी कइलन!
सानी धुनी वीर भोजपुरिया,
हिन्दुकुस के लांघि सहज में;
बलख बोखारा धांगत,
आमू नदिया का धारा में,
आपन तेगा धोवलन!
अउरी विजय-खुसी में घूमत,
सुघर कियरिया केसरि वाली;
सहज सुगन्ध सोहासुत लेत,
दउरावत घोड़न के;
दिल्ली आइ पहुँचलन!
मेंहरवली का,[१]
लोहा-खंभा में बा;
दूसर चनरगुपुत का,
ओह विजय कऽ;
सुजस कथा टांकलि सज!
एहू ले निकहा दिन पहिले,
भोजपुरी राजा ऊ पहिला;
मोरिय-गण का विमल वंश कऽ
लाल नगीना;
चनर गुपुत मतिहान,
गिरदा बान्हि मजे में,

टि० १. यमुना पट पर मेहरौली में चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) का विजय स्मारक लौहस्तम्भ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइलन राज-देस भारत पर!
छोड़ि निचाट दक्खिनी टुकड़ा,
ओह समय में;
सवँसे भारत,
होखल रहे एक जुटि;
उनका सुभ सासन में!
सेनापति सेलूकस,
आके पच्छिवँ का सीवाने;
ललकरलसि जब उनके,
फूलि जोम में,
बल अजमावे खातिर;
जब ऊ एही,
भोजपुरिया वीरन का बल से,
पहुँचि दूर कांबूल-कंधार;
समरभूई में ठोंकलन ताल!
भला कहीं तऽ,
ऊ भोजपुरिया वीर बुनेला;
सुखी पिप्पलीवन का,
मोरियकुल कऽ;
सानी सिंह सपूत,
आंखि देखावल सहसु दबकि के?
ऊ भारत माई कऽ,
सान बचावे खातिर;
राखे खातिर,
सीवँ-मान-मरजादा;
हेंकड़त जाइ पहुँचलन,
काबुल का मयदान!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह दूर अफगान देस का,
सिजिल कूग खेतन में;
भोजपुरी वीरन कऽ तेगा.
चमकल बिजुली नियर अचक्के!
ओह घरी पर,
देखि हजारन बिजुली,
गड़गड़ाइ के चमकत साथे;
जवन-सिपाहिन कऽ अँखिया झट,
भइली बंद अदंक-आंचि से!
वीर जवान सजग भोजपुरिया,
बहुत चोन्हाइल चढ़ल चंग पर-
सेलूकस कऽ,
मोंछि उखरले पर दम लिहलन!
उनका पोंछि दबा के,
तुरत परल भागे के!
एतने नाहीं,
भोजपुरी राजा से;
जान बचावे खातिर आपन
बेटी तक बियाहि दिहलन ऊ!
अब आगे बढ़ि देखीं,
दुनिया का इतिहास-जगत में;
सुरुजदेव का,
जगमग ज्योति समान
चमकेवाला;
ऊ अशोक सुभधरमी,
ओही चनर गुपुत कऽ;
नाती रहे नगीना!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोरिय-कुल में,
प्रिय अशोक का;
लिहला से अवतार,
भोजपुरी-छेतर कऽ;
कहे बाति के,
सवँसे भारत आ संसार;
भइल निहाल जुड़ाइल!
नगद धरम-अमिरित कऽ,
सुरस सोहासुत,
सज झरना बहला से;
बहुतन के सुख सांति भेंटाइलि!
बिगरल हूण धुमंतू
वीर बली मनसोख;
बउराइल गुमान बस,
रहलन देत दरेरा सभके!
सबँसे महादेस बड़-
निपुन एसिया वाला;
थरथराइ के उनसे,
बनल रहे बेचारा,
ओहू घरी वीर भोजपुर कऽ,
ओह ढीठ जुलुमिन कऽ,
कनवां मललन,
अउरी अगुवा आपन;
बना वीर असकंदगुपुत के,
धकियवल उनका के!
परिकल गोइयां ढीठ हूणन का,
मुँह में करिखा लागल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ ऊ लोग पोंछि सटकवले,
भागि-पराइ के निकललन,
देशवा से हमनीका।
सैदपूर-भितरी में,
ओह विजय कऽ;
कथालाट पर,
थोरे में टांकलि बा!
एहिजे बलिया;
भिरगू मुनि का पुन्नि-धाम कऽ,
वींर सुरेमन;
मंगल पांडे,
गावँ-जराढ़ी-नगवाँ
संतावन में बारिक पुर में;
तोरि गुलामी का बान्हम के,
आजादी कऽ;
पहिला संख बजवलन,
झंडा कइलन खड़ा गदर कऽ,
एही धरती कऽ ऊ,
सान्नी-सिंह-सपूत नगीना;
धुनी धुरँधर वीर-बांकुड़ी,
बागिन कऽ सरदार सिरोमनि;
बाबू कुवँर सिंह बलवान!
आजादी का,
पहिला महासमर कऽ;
अगुवा आतमबली-महान!
भरल रहे नस-नस में जिनका,
देश-प्रेम-गौरव-अभिमान!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पराधीन भारत माई का,
सेवा-दया-त्याग-तपवाला;
बली हाथ-पावँन में,
परल हथकड़ी-बेड़िन के, जे
काटे खातिर,
ओह ढील अस्सी बरिसन का;
गिरत उमरि में,
हंकड़ि उठवलन तेगा;
मांथ देइ मरजादा रखलन,
हँसत-हँसत भइलन बलिदान!
एहिजे सुघर-सांत-मन मोहक,
जिला सुखी सज चपारन में;
जे भोजपुरी भासा कऽ
पुरहर प्रेमी भगत सुजान-
गांधी बाबा,
निलहा कोठी वाला;
कूर फिरंगी-जमींदारन कऽ,
जुलुम मेंटावे खातिर;
सतियागरह लड़ाई छेड़लन!
एहिजे भोजपुरी का,
पोढ़ पुरनका गढ़ छपरा में;
गावँ सोहासुत जीरादेई,
जहवाँ लाल निराला;
राजेन्दर परसाद जनम ले,
सुख-सुराज का,
धरम-समर में लड़लन;
अंउरी जीति सान से सज सें,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देस सुतंतर कइलन!
मुकुट देस का मरजादा कऽ;
पहिले पहिल मांथ पर उनके;
राखल गइल सजा के!
बाद जुगन का,
रजधानी दिल्ली में;
राज सिंहासज पर जनता का,
बइठावल गइलन ऊ;
सभई का सनमति से!
देखि तिरगा झंडा,
छाप लगावल-
प्रिय-दरसी अशोक का,
अछय-अनंत-धरम चक्का कऽ;
लाल किला पर,
फररावत उनका के,
माई जमुना हँसलि ठठा के;
जेकरा निरमल जल में,
ना जाने कि केतना;
जुलुमी सेनापति सरदार,
धोवलन आपन;
लहू-लुहान भइल तलवार!
ऊ एही दिल्ली में,
बउराइल तैमूरलंग के;
लँगटे नाचल देखलसि!
देखलसि ऊ जुलुमी नादिर कऽ,
भारी जुलुम जोर जनता पर!
चतुर पैंतरावाज़ खेलाड़ी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कली-छली अकबर का;
सतरंजी चालन के;
ऊ अति सांतधीर बनि;
देखति-समुझति रहलि कले-कल!
दिन ऊ देखले बाटे,
जहांगीर आ नूरजहाँ कऽ;
शाहजहां कऽ बइठल-
भोर-सिंहासन पर अगरा के,
बाद बन्हाके जेहल जात;
कब ऊ भूलि सके ले,
आलमगीरी रोब-दाब आ;
राजहुकुमति का करनी के,
जबकि सभे लोग का सनमुख;
सदर चांदनी चउक-मोर पर,
भाई मतीदास छिब्बर के;
बीच माथ पर आरा धइके,
चीरल गइल दूइटुकड़न में!
सुजन-सुधरमी,
पुरुस धीर ऊ रहलन!
साधुसंत उपकारी जग में,
सासति-जलुम सहेलन;
कबे भाव बदला कऽ,
उनका मन में होखे नाहीं!
अउरी हालि सुनीं आगे कऽ,
भोजपुरी भाइन का,
पुरुसारथ-तप-त्याग-लगन कऽ!
भोजपुरी परदेस निराला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां समय-समय से;
लिहलन जनम अनेकन,
सुजन सुधरमी पूत सपूत;
साधुसंत उमकारी केतने,
कवि पंडित विदमान विचारक;
वीर सुरेमन लाल नगीना,
बलिदानी मतिधीर साहसी;
जुग रचवइया नया नमूना,
गुढ़वइया इतिहास देस के!
जिनका कठिन कथा के
बता सके ले;
सबुर धीरता राखेवाली,
सांत धरतिया माईं चाहे,
पहरेदार परीन पुराना,
सुरुज-चरनमा तारा लोग!
दबलगूढ़ इतिहास कथा के,
राखि किनारे;
जब आगे के डेग बढ़ाईं;
त्तब देखबि कि;
कविवर संत सुधरमी,
सिद्ध सरहपा-शीभू;
निपुन जायसी,
सुरसतिपुत सुलायक;
दास कबीर भगत निरगुनिया,
पलटू धरमदास धरनी आ-
दरिया भीखा बूला साहब,
एही भोजपुरी धरती क;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

लाल नगीना रहलन!
एहिजे गाधिपुरी का पांजर,
देवा गांव निपुन में;
जुझउतिया-बाभन का कुल में,
जनम भइल सुभ;
त्यागी-संत-महरसी,
सामी सहजानंद सहज चित;
धरमाचारज जन-नेता कऽ,
जे कि रहलन-
संसकीरित भासा कऽ,
सफल महापंडित गुनवान!
आजादी का महासमर कऽ,
करमवीर जन-नायक;
सेनापति सरदार!
अगुवा निपुन जगावे वाला,
सभ किसान-लोगन के!
जिनका देस भगति-आतम-बल,
त्याग-लगन-सेवा आ-
पुरुसारथ-तप-करम-जोग कऽ;
लोहा मनलन;
सभे सुराजी सेना-नायक,
धरमधुरंधर गांधी बाबा
वीर सुभास जवाहिरलाल
भोजपुरी भासा का,
सहज सुगंधित मधुवन;
आजमगढ़ के,
कइसे भूलि सकीला रउरा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां फूल निराला;
परिजात हरिचंदन अइसन,
उगलन राहुल बाबा
गावँ कनइला भीतर!
राहुल जी कां,
हिन्दी-भोजपुरी सेवा कऽ;
जानकार के नइखे?
चललि कलमियां उनकर,
बहुमत जनता का हित;
सहज-शांति सुख खातिर?
देस विदेस नगर गावँन में,
सगरे उनका;
पुरुसारथ तप तेज ग्यान कऽ,
चटक जोति जा पहुँचलि;
डहरि देखवलसि,
भूललि भटकलि बेचारी जनता के!
मतलब मोट हमार कहे कऽ,
कि हमनीं का;
भोजपुरी-भासा में
बाटे बहुत ग्यान गुन;
नगद बीरता भारी?
एकरा के दबाइके,
राखल जाइ सके ना?
हमरा पासे
गति-जीवन मरजादा
बाटे पोढ़ कलमियां,
लाठी भाला;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गोली आ तरुवारि?
हिरदय बाटे परशुराम कऽ;
परतिग्या कौशिक कऽ?
शेरशाह कऽ पुरुसारथ शुभ,
शानी तेगा कुवर सिंह कऽ?
बाकी त हम,
बउध देव कऽ चेला;
सेवक गांधी जी कऽ,
लड़बि सांति से सज से;
अपना प्रिय हक खातिर,
जब ले ओके पाइबि नाहीं!
हे पंडित परधान!
विदमानन में सुघर सुमेरू;
प्रिय सुनीति जी,
सवतुक नेति चलायीं?
भोजपुरी-भासा के,
मानीं जानीं आपन;
देईं ओकर,
जायज हक-पद;
करीं मान-मरजादा?
दूसर विनय करत बानीं हम,
पंडित राज-मांचवे-
परभाकर-मतिमान गुनी से,
दया नजरिया फेरे खातिर?
अउरी आगे,
बलिया-सांति निकेतन,
चड़ीगढ़-काशी का;
निपुन जोतिसी पंडित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूइ वेद का पदवी वाला;
सिरि परसाद हजारी जी से;
हथजोरी वा इहे हमार;
देई हमरा,
भासा के मरजादा!
एतने नाहीं,
अपना बुढ़वा पंडित;
खोजी निपुन सुलायक
सिरि बनारसी दास धीर-थिर,
सवतुक नेति धरम-मतिवाला;
हंस मानसर-वासी;
पानी-दूध अलग करवइया,
चूँगि मरम मोती वेदन के;
चतुरवेदि-पदवी जे पवलन,
उनहूँ से हम अरज करिब कि;
भोजपुरी-भासा के,
मानि तुरत मरजादा देसु!
आखिर में हम अपना,
खास दयालू भाई;
पंडित उदयनरायन जी से,
भाई आसत्यासी,
दूनो सग नाता से;
अरज करवि कि,
ऊहो जोर लगावसु;
पंडित लोगन के समझावसु,
भोजपुरी-भासा का,
हक-पद-गुन सेवा के!

-०-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बौद्धायन
भोजपुरी का सांस्कृतिक महाकाव्य

'बौद्धायन'-लोकभाषा भोजपुरी में दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती-अध्यक्ष राजगुरूमठ, शिवालाघाट, वाराणसी द्वारा लिखित एक अनूप सांस्कृतिक महाकाव्य है, जो शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है।

• अश्वघोष के 'बुद्धचरितम' के अतिरिक्त किसी भी भारतीसु भाषा में भगवान बुद्ध के जीवन चरित और उनके दिव्य संदेश के संबंध में कोई मौलिक काव्यग्रन्थ नहीं है। लेखक ने ३१ सर्गों एवं १५०० पृष्ठों में यह महाकाव्य विशुद्ध मौलिक भोजपुरी में लिखा है। महाकाव्य में समग्रवुद्धचरित के अतिरिक्त बुद्धात्तरकाल की सोलह शताब्दियों में बौद्धधर्म एवं संस्कृति की प्रगति का मनोहर विवरण है। आप इसमें लंका, वर्मा, जावा, कंबुज, श्याम, चीन-कोरिया, जापान और मध्य एशिया के कुच बलख बुखारा तोतन काशगर मंगोलिया तिब्बत आदि देशों में बौद्धसंस्कृति के प्रचार-प्रसार की रोमांचक कथा पढ़ेंगे।

डॉ० विवेकी राय के विचार

'उस दिन वाराणसी के शिवालाघाट स्थित राजगुरुमठ पर एक दुबले पतले तेजस्वी सन्यासी से भेंट हुई। उन्होंने अपना ३१ सर्गों का एक विशाल महाकाव्य दिखया- बौद्धायन और लगभग ४० हजार पंक्तियों के इस अद्भुत महाकाव्य को देखकर में दंग रह गया। मुझे ऐसा लगा कि महाकाव्य के साथ-साथ यह बौद्धध्दर्शन विभिन्न दार्शनिक विवाद, विदेशों में बौद्धधर्म का प्रचार, विश्वयात्रियों का विवरण और सबके केन्द्र में महात्मा बुद्ध के जीवन चरित्रांकन! फिर यह सब हुआ है परिनिष्ठित लोकभाषा भोजपुरी में सत्रहजिलों के सात करोड़ लोगों की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, सिद्धों संतों और लोक कवियों की भाषा में। स्वामीविमलानन्द सरस्वती ने दसवर्ष लगभग सब रोज श्रम करके इस महाकाव्य को सवारा है। ('पुस्तक परिचय से')

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुवाद

निवास- "सुधर्मा"
१६, हिन्दुस्तान पार्क, कलकत्ता-२९
फोन०- ४६-१९२१.

कार्यालय
नेशनल लाइब्रेरी कैम्पस
वेल वेदयर, कलकत्ता-२७
फोन न०-४५-५३१९

सुनीति कुमार चटर्जी
नेशनल प्रोफेसर आफ इण्डिया
इन ह्यूमनिटीज

श्री दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती
अध्यक्ष राजगुरू मठ
शिवालाघाट, वाराणसी (यू०पी०)

पूज्य स्वामीजी,

मुझे आपकी लम्बी भोजपुरी कविता के साथ दिनांक ८-१०-७१ का पत्र मिला जो 'खुला पत्र' के रूप में मुझे सम्बोधित किया गया था। आपने मुझे भोजपुरी को स्वतन्त्र साहित्य के रूप में स्वीकार करने के लिये आग्रह किया है। आपकी कविता में जो बहुत ही सुन्दर है भोजपुरी क्षेत्र की संस्कृति का सर्वेक्षण है। मैं आपको इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। किन्तु जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा है, मेरा इस सम्बन्ध में कोई हाथ नहीं है, इसका निर्णय तो भोजपुरी के भाषाविदों की विशेष समिति द्वारा होगा और जब इस समिति की बैठक होगी इसमें डाक्टर उदयनारायण तिवारी जैसे भोजपुरी के विख्यात विद्वान रहेंगे। आपको संसद के माध्यम से बाहर से प्रयत्न करना चाहिये। हमारी समिति भोजपुरी की स्वतन्त्र भाषा के रूप में संस्तुति प्रदान कर सकती है किन्तु यह सरकार पर निर्भर करता है कि वह हमलोगों के इस प्रस्ताव को साकार करने के लिये उपाय और साधन दें। मैंने इस सम्बन्ध में समस्त पत्र अपने सचिव डा० पी० माचवे को भेज दिया है जो आपको इसके आगे जो सूचना चाहेंगे देंगे।

अपनी सारी शुभकामनाओं के साथ और अंग्रेजी में लिखने के लिये क्षमा याचना केसाथ क्योंकि मैं अत्यन्त व्यस्त हूँ और अंग्रेजी में पत्र बोलकर लिखवाने और टाइप कराने में मेरे लिये सुविधाजनक है।

आपका विश्वस्त
सुनीति कुमार चटर्जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जवाब

Residence:
Sudharma
16 Hindusthan Park
Calcutta p-28

Office:
National Library Campus
Belvedere, Calcutta-27
Phone: 455319

SUNITI KUMAR CHATTERJI
NATIONAL, PROFESSOR OF INDIA
IN HUMANITIES

Sri Dandiswami Vimalananda Saraswati
Adhyaksha, Rajguru Math
Shiwala Ghat, Varanasi- (UP)

Revered Swamiji,

I have received your letter to me dated 8.10.71 together with your long poem in Bhojpuri, which was also addressed to me as an 'Open Letter'. In these you have pressed for the acceptance of Bhojpuri as an independent literary language, and in your poem, which is very fine, you have given a survey of the culture of Bhojpuri area. I thank you very much for all this. But as I have already mentioned to you. I have no hand in the matter. This will be decided by the Special Committee of Linguistic scholars on Bhojpuri, and when the meeting is held eminent scholars of Bhojpuri like Dr. Uday Narayan Tiwari will be there. You should try from outside, through the Parliament. Out Committee may recommend Bhojpuri as an independent language, but is lies with the Government of India to supply us with the ways as means to make the proposal work. I have sent all the papers in this connection to our Secretary, Dr. P. Machwe, who will give you any further information you want.

With all my good wishes and apologies for writing my reply in English, as I am terribly busy and it is convenient to dictate my letter and have it typed in English.

Yours Sincerely,

Sd. Suniti Kumar Chatterji

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.